Reviews of Literature
Volume 1 , Issue 10 / May 2014 ISSN:-2347-2723

मातृभाशा और शिक्षा

शीला य भंडारि

सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग , कर्नाटक कला महाविद्यालय, धारवाड
(कर्नाटक) भारत

***सारांश* :**

मातृभाषा बालक में स्वतंत्र रूप से चिन्तन करने की क्षमता बढाने उसकी कल्पना शक्ति को विकसित करने के लिए सहायक है । अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाती है ।

प्रमुख शब्द : बालक के परिवे"ा, सीखना परिवार, जीवन और ि"ाक्षा, कल्पना"ाक्ति ।

***प्रस्तावना*:**

बालक के व्यक्तित्व निर्माण और संज्ञानात्मक विकास में मातृभाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि इसी के माध्यम से हम बोलते, लिखते, विचार करते और ि"ाक्षा ग्रहण करते है। यही हमारे स्वप्नों तथा अनुभूतियों की भाषा है। यही कारण है कि ि"ाक्षा शास्त्रीयों ने एकमत से प्राथमिक ि"ाक्षा के लिए भाषा, वि"ोष रूप से मातृभाषा को सर्वोपरि माना है। वस्तुतः प्राथमिक स्तर पर भाषा ि"ाक्षण एक विषय की ि"ाक्षा न होकर सम्पूर्ण ि"ाक्षा की धूरी बन जाती है। अतएव भाषा को मूलधार बनाकर सम्पूर्ण प्राथमिक ि"ाक्षा को अधिक प्रभावी और सार्थक बनाया जा सकता है। कक्षा एक से पूर्ण बालक सामाजिक परिवे"ा के माध्यम से सुनना और बोलना स्वभाविक रूप से सीख चुका होता है। आज परिवार और समाज में जिस वातावरण में बच्चे पोषित होते है उसमें वे भाषा के मानक रूप से बहुत अधिक दूर नहीं होते। वस्तुतः भाषा की ि"ाक्षा का मूल और प्रमुख उद्दे"य विधार्थी को मानक भाषा के निकट लाना है जिससे कि वे पाँचवी कक्षा तक पहुँचते भाषा के मानक रूप से परिचित हो सके। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो विद्यालयी ि"ाक्षा औपचारिक रूप से छात्र की भाषा का परिष्कार करती है उसका संबर्धन करती है।

बालक अपने माता पिता और परिवार के अन्य सदस्यो से स्वतः एक भाषा सीखता है, वही उसकी मातृभाषा या प्रथम भाषा कहलाती है। मातृभाषा अर्थ, माता की भाषा अथवा माता से ग्रहण की गई भाषा है। इसका आ"ाय यह नहीं कि बालक से तथा परिवार के अन्य सदस्यों से भी सीखता है। किन्तु बालक बचपन में माँ अथवा पालन–पोषण करने वाली धाय के निकट सबसे अधिक रहता हैं, इस लिए इस दौरान सीखी गई भाषा को मात बोली या मातृभाषा की संज्ञा दी जाती है। यदि मातृभाषा की संज्ञा दी जाती है। यदि मातभाषा ही बालक के परिवे"ा की भी भाषा हो तो वह उसके माध्यम से व्यापक समाज से सम्पर्क करता है और उसी के मानक रूप द्वारा आगे औपचारिक ि"ाक्षा पाता है। इस लिए औपचारिक ि"ाक्षा में मातृभाषा का तात्पर्य, किसी क्षेत्र वि"ोष की उस भाषा से होता है जिसके माध्यम से उस क्षेत्र का पढा लिखा समाज विचारों का आदान या सम्प्रेषण करता है। सुस्पष्टता की दृष्टि से घर की बोली को माता की बोली तथा

समाज द्वारा स्वीकृत भाषा को मातृभाषा कहते है मातृभाषा का समाज स्वीकृत मानक रूप ही समान्यत है। मातृभाषा का जीवन और ि"ाक्षा से गहरा सम्बन्ध है। यह विद्यालय में पढ़ाया जानें बाला मात्र एक विषय या अन्य विषयों का नाध्यम ही नहीं अपितु विद्यार्थीयों के दैनिक जीवन का अविभाज्य अंग भी है।

भाषा बालक में स्वतंत्र रूप से चिन्तन करने की क्षमता बढाने उसकी कल्पना शक्ति को विकसित करने, अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाती है। प्राथमिक स्तर पर भाषा का मूल उद्दे"य बालक को मौखिक और लिखित दोनों ही रूप में प्राभाव"ाली अभिव्यक्ति के योग्य बनाना है। भाषा को मात्र कक्षा अध्ययन और परिक्षा के विषय के रूप में ही न पढाकर हमें बच्चो को ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए कि उनमें चिंततनात्मक एंव सृजनात्मकता का विकास हो, वे भाषा में ही साँस ले और भाषा में ही जीना सीखें। उन्हें ऐसा परिवेष दिया जाना चाहिए कि वे पठन–पाठन एवं लेखन के साथ–साथ वाचन एवं श्रवण कौ"ाल पर भी समान रूप से ध्यान दें। इससे उनके मौखिक अभिव्यक्ति कौ"ाल में पर्याप्त सुधार होगा। तात्पर्य यह कि भाषा के मौखिक पक्ष की उपेक्षा न होनी चाहिए, क्योकि भाषा का मौखिक रूप ही उसका मूल रूप हैं। नई ि"ाक्षा नीति 1986 में बालक के सर्वागीण विकास पर वि"ोष बल दिया गया है। नई ि"ाक्षा नीति में समाहित इस वि"िाष्ट उद्दे"य की पूर्ती के लिए भाषा ि"ाक्षण की ऐसी सामग्री निर्मीत करने पर बल दिया गया जो इस लक्ष्य की प्राप्ति में प्रभावी ढंग से सहायक सिद्ध हो सकें। प्राथमिक स्तर के बच्चों को सहज को सहज रूप में भाषा का ज्ञान कराने के साथ–साथ भाषा को सीखने–समझने में अपनी नैसर्गिक क्षमता का रचनात्मक उपयोग करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर भाषा ि"ाक्षा में बच्चों को स्वर–व्यंजन, मात्रा और संयुक्ताक्षर पढ़ने और लिखने में समर्थ बनाना, सुनकर समझना, ध्वनि सुनकर अन्तर करना, सुनने की योग्यता बढ़ाना, बोलने में स्वतंत्र और मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करने के साथ–साथ शुद्ध उच्चारण करने और शब्द भण्डार बढ़ाने पर वि"ोष ध्यान देना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों के मानसिक विकास के लिए ऐसी भाषा पाठ्यसामग्री का निर्माण करना चाहिए जो बच्चों में दे"ा के प्रति प्रेम और गौरव की भावना जाग त कर सकें, वे सभी धर्मों का आदर कर सके और उनमें सर्वधर्म सदृभाव तथा बसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विकास हो तथा साथ ही स्व–अधिगम की योग्यता व जीवन मूल्यों का भी विकास हो। बच्चों को व्याकरण से परिचित कराने के लिए पाठों और

अभ्यासों में व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग सीखाने का प्रयास करना चाहिए। वैसे व्याकरण के नियमों का पालन प्रायः दैनिक जीवन में नहीं होता फिर भी अभिव्यक्ति की सहजगता के लिए मौखिक और लिखित दोनों ही रूपों में इसका अपना महत्त्व है क्योंकि भाषा में अर्थ का बहुत महत्त्व है। आज के समय में भले ही अंग्रेजी वि"व में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है लेकिन हमारे दे"ा में ि"ाक्षा के लिए मातृभाषा सबसे लोकप्रिय माध्यम है।

उपसंहारः

उपर्त्युक्त से ज्ञात होता है कि मातृभाषा भावभिव्यक्ति का एक स"ाक्त माध्यम है। इसको विद्यालयी पाठ्यचर्या में सर्वोच्च स्थान दिया जाय । प्राथमिक कक्षाओं में उसके अध्ययन पर अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक समय लगाया जाए, क्योंकि वहीं सभी विषयों के अध्ययन–अध्यापन का आधार है परन्तु अक्सर देखने में आथा है कि विद्यालयों में मातृभाषा अध्ययन–अध्यापन पर अपेक्षित बल नहीं दिया जाता । अध्यापकों की सारी शक्ति विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों के ि"ाक्षण पर केन्द्रित रहती है किन्तु भाषा पर पूर्ण अधिकार न होने के कारण बालकों में इन विषयों की सूझ–बूझ भी अधूरी रह जाती है। अतः आव"यक है कि मातृभाषा के अध्ययन–अध्यापन को ि"ाक्षा का केन्द्र बिन्दु माना जाए ताकि बालकों में भाषा–कौ"ालों का विकास हो, कल्पना शक्ति में मौलिकता और अन्तः वृत्तियों में सजगता आए। तभी उनके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सकेगा।

सन्दभं ग्रन्थ

1. रिसर्च लिंक – 2008
2. कुरुक्षेत्र, मई – 2006
3. समाज"ाास्त्र
4. रिसर्च लिंक – 2008
5. कुरुक्षेत्र, एप्रेल – 2007